بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974.E-Mail :ansarullah@qadian.in　KhulasaKhutba-13.05.2022　محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के दौर में इस्लाम से विमुख होने वालों के उपद्रव तथा विद्रोह के समय भिजवाई जाने वाले अभियानों का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 13 मई 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के दौर में जो फ़ितने थे, उनके विरुद्ध की जाने वाली कारवाई के वर्णन की श्रंखला में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. की बुताह की ओर मालिक बिन नुवैरा की तरफ़ आगे बढ़ने का विवरण बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया-

मालिद बिन नुवैरा का सम्बंध बनू तमीम की एक शाखा बनू यर्बूअ से था। उसने 9 हिजरी में मदीना आकर इस्लाम क़बूल किया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे अपने क़बीले के ज़कात एकत्र करने वाले ओहदे पर नियुक्त किया था परन्तु जब आप स. का निधन हुआ तथा अरब में इस्लाम से विमुखता एवं विद्रोह की लहर उठी तो वह भी मुर्तद होने वालों में से हो गया। जब आप स. के देहान्त की सूचना उसे पहुंची तो उसने ख़ुशी एवं उल्लास समारोह मनाया तथा जहाँ अपने क़बीले के उन मुसलमानों की हत्या की जो ज़कात को अनिवार्य समझने के साथ साथ उसे मुसलमानों के मर्कज़ अर्थात मदीना में भिजवाने को भी न्यायसंगत मानते थे, वहीं झूठा नबी होने की दावेदार तथा दुष्ट सजाह नामक स्त्री के साथ शामिल हो गया जो कि एक अति विराट सेना लेकर मदीना पर हमला करने की योजना बना रही थी।

अरब की विद्वान ईसाई धार्मिक नेता उम्मे सादिर सजाह पुत्री हारिस, क़बीला बनू तमीम से सम्बंध रखती थी तथा उन नबुव्वत के कुछ दावेदारों तथा विद्रोही क़बीलों के सरदारों में से थी जो अरब में इर्तदाद (इस्लाम से विमुखता) से थोड़ी अवधि पहले अथवा उसके चलते सामने आए थे। वह इस निश्चय से बढ़ी चली आ रही थी कि अपने साथ एक महान सेना लेकर अचानक बनू तमीम पहुंच जाएगी तथा नबुव्वत की घोषणा करके अपने ऊपर ईमान लाने की दावत देगी। इस तरह पूरा क़बीला सहमत होकर उसके साथ हो

जाएगा तथा उयीना की भांति बनू तमीम भी उसके विषय में यह कहना शुरु कर देंगे कि बनू यर्बूअ की नबिय्या क़ुरैश के नबी से उत्तम है क्यूँकि मुहम्मद स. वफ़ात पा गए हैं और सजाह जीवित है।

सजाह अपनी सेना के साथ बनू यर्बूअ की सीमा पर पहुंच कर ठहर गई तथा क़बीले के सरदार मालिक बिन नुवैरा को बुला कर सन्धि तथा मदीने पर हमला करने के लक्ष्य से रुक जाने का सुझाव दिया और कहा कि मदीना पहुंच कर अबू बकर की सेनाओं से मुक़ाबला करने से अच्छा यह है कि पहले अपने क़बीले के विरोधी दल का सफ़ाया कर दिया जाए।

मालिक के इस सुझाव को पसन्द करते हुए सजाह ने बनू यर्बूअ के अन्य सरदारों को भी सन्धि की दावत दी परन्तु वकीअ के अतिरिक्त किसी ने भी यह दावत स्वीकार नहीं की, इस पर उसने मालिक, वकीअ तथा अपनी सेना को साथ लेकर दूसरे सरदारों पर धावा बोल दिया, घमसान का युद्ध हुआ जिसमें दोनों पक्षों की भारी संख्या का वध हुआ तथा एक ही क़बीले के लोगों ने एक दूसरे को बन्दी बना लिया। कुछ ही समय पश्चात मालिक तथा वकीअ को इस स्त्री का अनुसरण करने की अपनी ग़लती का आभास हुआ तो उन्होंने दूसरे सरदारों से सन्धि कर ली तथा एक दूसरे के बन्दो वापस कर दिए।

अपनी दुष्ट योजना की असफलता पर सजाह ने बनू तमीम से मदीना की ओर कूच किया, वहाँ पहुंच कर औस बिन ख़ुज़ीमा से उसका आमना सामना होकर टकराव हुआ तथा जिसमें उसकी हार हुई। औस ने इस शर्त पर सजाह को वापस जाने दिया कि वह इस बात का पक्का निश्चय करे कि वह मदीना की ओर आगे नहीं बढ़ेगी।

सजाह की सेना के सरदार मदीने जाने के रास्तों को बन्द होता देख कर परेशान हो गए और सजाह से भविष्य की योजना के बारे में पूछा। इसके जवाब में उसने वह्यी के रंग में एक तुक बन्दी से भरी इबारत घड़ कर उनको विश्वास दिलाया कि यदि मदीना जाने के रास्ते बन्द हो गए हैं तो भी चिंता की कोई बात नहीं, तथा यमामा की ओर बढ़ने का आदेश दिया।

सजाह जब अपनी सेना के साथ यमामा पहुंची तो तो मुसैलमा को बड़ी चिंता हुई, उसने सोचा कि यदि वह सजाह की सेना से युद्ध करने में व्यस्त हो गया तो उसकी शक्ति शिथिल पड़ जाएगी, इस्लाम की सेना उस पर धावा बोल देगी तथा आस पास के क़बील भी उसके आज्ञा पालन का दम भरने से इंकार कर देंगे। यह सोच कर उसने सजाह से सन्धि करने की ठानी। पहले उसे भेंट इत्यादि भेजे, फिर कहला भेजा कि वह स्वयं उससे मिलना चाहता है। उसने मुसैलमा को उपस्थित होने अनुमति दे दी।

मुसैलमा बन् हनीफ़ः के चालीस लोगों के संग सजाह के पास आया, एकांत में बात चीत की, सजाह को पूर्णतः अपने क़ब्ज़े में लेने तथा अपना अनुयायी बनाने के लिए उसने यह सुझाव पेश किया कि हम दोनों अपनी नबुव्वतों को एकत्र कर लें तथा आपस में पति पतनी क बन्धन में बन्ध कर एक हो जाएँ, सजाह ने यह सुझाव स्वीकार कर लिया। तीन दिन उसके कैम्प में रहने के बाद यह अपनी सेना में वापस आई तथा अपने साथियों को बताया कि उसने मुसैलमा को हक़ पर पाया है इस लिए उससे शादी कर ली है।

लोगा ने पूछा कि कुछ मेहर भी तय किया, उसने कहा कि मेहर तो निश्चित नहीं किया। उन्होंने सुझाव दिया कि आप वापस जाएँ तथा मेहर निश्चित करके आएँ, क्यूँकि आप जैसे व्यक्तित्व के लिए मेहर के बिना शादी करना उचित नहीं। अतः वह उसके पास वापस गई तथा मुसैलमा को अपनी मांग से अवगत

किया। इस पर मुसैलमा ने उसके लिए इशा तथा फ़जर की नमाज़ों में कमी कर दी तथा वे बन्द कर दीं। इसी प्रकार यह तय पाया कि वह यमामा की ज़मीनों के लगान की आधी आमदनी को सजाह को भेजेगा। तत्पश्चात वह निरन्तर बनू तग़लब में ठहरी रही, तौबा कर ली तथा इस्लाम क़बूल कर लिया, यहाँ तक कि हज़रत अमीर मुआवियः ने भुखमरी वाले साल में उसे उसकी क़ौम के साथ बनू तमीम में भेज दिया जहाँ वह मृत्यु तक मुसलमान होने की अवस्था में रहती रही।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को आदेश दिया था कि तुलैहल असदी के मामले से निपट कर आप रज़ी. मालिक बिन नुवैरा के मुक़ाबले के लिए जाँए जो बुताह में ठहरा हुआ था। जब बुताह आए तो वहाँ किसी को भी नहीं पाया, तो आप रज़ी. ने विभिन्न सैन्य दल इधर उधर भेजे तथा उनको निर्देश दिया कि जहाँ पहुंचें वहाँ पहले इस्लाम की दावत दें, जो इसका जवाब न दे उसे बन्दी बना कर ले आएँ तथा जो मुक़ाबला करे उसकी हत्या कर दें। उन्हीं दलों में से एक दल मालिक बिन नुवैरा को जिसके साथ बनू सअलबा बिन यरबू के कुछ आदमी भी थे, बन्दी बनाकर लाया।

एक रिवायत के अनुसार उस रात कड़ाके की ठंड थी, जब ठंड और अधिक बढ़ने लगी तो हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने मनादी का आदेश दिया- اَدْفِئُوْا اَسْرٰكُمْ अर्थात अपने बन्दियों को गर्म करो किन्तु बनू किनाना के मुहावरे में इन शब्दों का अर्थ यह था कि हत्या कर दो। सैनिकों ने इन शब्दों का अर्थ स्थानीय मुहावरे के अनुसार समझते हुए उस सबको मार डाला। हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को जब यह शोर सुनाई दिया तो वे अपने ख़ेमे से बाहर आए किन्तु उस समय तक सिपाही उन सब बन्दियों का काम तमाम कर चुके थे, अब क्या हो सकता था। उन्होंने कहा अल्लाह जिस काम को करना चाहता है वह हर हाल में होकर रहता है।

एक अन्य रिवायत के अनुसार हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने मालिक बिन नुवैरा को अपने पास बुलवाया, सजाह का साथ देने तथा ज़कात रोकने के बारे में उसको चेतावनी दी तथा उसे कहा कि क्या तुम नहीं जानते, ज़कात नमाज़ की साथी है? उसने कहा कि तुम्हारे साहिब का यही विचार था अर्थात रसूलुल्लाह के बजाए साहिब या साथी कह कर पुकारा। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने फ़रमाया- क्या वे हमारे साहिब हैं, तुम्हारे साहिब नहीं? फिर आप रज़ी. ने हज़रत ज़रार रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को उसकी गर्दन उड़ाने का आदेश दिया।

इतिहास के कथनानुसार इस विषय में अबू क़तादा रज़ी. ने ख़ालिद रज़ी. से चर्चा की और दोनों के बीच विवाद हुआ और अबू क़तादा रज़ी. हज़रत ख़ालिद रज़ी. से मतभेद करते हुए सेना को छोड़ कर हज़रत अबू बकर रज़ी. के पास चले आए तथा शिकायत की, कि ख़ालिद रज़ी. ने मालिक बिन नुवैरा ही हत्या करवाई है, जबकि वह मुसलमान था। हज़रत अबू बकर रज़ी. अबू क़तादा रज़ी. से इस बात पर अत्यंत नाराज़ हुए कि वे सेना के अमीर हज़रत ख़ालिद रज़ी. की अनुमति के बिना सेना को छोड़ कर मदीना आए हैं तथा उनको वापस जाने का आदेश दिया। तबरी के इतिहास में इसका अधिक विवरण यूँ वर्णित है कि हज़रत उमर रज़ी ने हज़रत अबू बकर रज़ी की सेवा में निवेदन किया कि ख़ालिद रज़ी. एक मुसलमान की हत्या का अपराधी है तथा यदि यह बात साबित न हो सके तो इतना तो प्रमाणित है जिससे कि उनको बन्दी बना दिया जाए इस मामले में, कि हत्या तो बहरहाल हुई है। इस मामले में हज़रत उमर रज़ी. ने बड़ा अनुरोध किया।

चूंकि हज़रत अबू बकर रज़ी. अपने कार्यकर्ताओं तथा सैन्य अधिकारियों को कभी बन्दी नहीं बनाते थे, इस लिए उन्होंने फ़रमाया- ऐ उमर, इस मामले में चुप रहो, ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद से विवेचन करने में ग़लती हुई है, तुम उनके बारे में कदाचित कुछ मत कहो और हज़रत अबू बकर रज़ी. ने मालिक का ख़ूंबहा (वह धन राशि जो ग़लती से किसी की हत्या करने के बदले में दी जाती है) अदा कर दिया। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने पत्र लिख कर हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को आने का कहा, वे आए और उन्होंने इस घटना का पूरा विवरण बयान किया तथा खेद प्रकट किया एवं क्षमा चाही, आप रज़ी. ने उनकी क्षमा को स्वीकार कर लिया।

शरह मुस्लिम नामक पुस्तक में इमाम नववी रहमुल्लाह फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. ने मालिक बिन नुवैरा के बारे में पूरी छान बीन की तथा इस नतीजे पर पहुंचे कि ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद उसकी हत्या के आरोप से बरी हैं। आप रज़ी. इस मामले में दूसरों की अपेक्षा घटना क्रम में एक ख़लीफ़ः होने के कारण अधिक जानकार तथा गहरी नज़र रखते थे तथा आप रज़ी. का ईमान भी सब पर भारी था, हज़रत ख़ालिद रज़ी. के साथ व्यवहार में आप रज़ी. रसूलुल्लाह का अनुसरण कर रहे थे।

हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद के विषय में एक अन्य आपत्ति यह भी की जाती है कि आप रज़ी. ने युद्ध के समय मारे गए की पतनी उम्मे तमीम लैला सुपुत्री मिनहाल से शादी की तथा इद्दत गुज़रने की भी प्रतीक्षा नहीं की। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने इस आपत्ति के उत्तर में हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी का हवाला बयान फ़रमाया कि वास्तव में यह घटना ही मनघड़त है.....मालिक बिन नुवैरा ने इस महिला को एक लम्बी अवधि से तलाक़ दे रखी थी तथा उस मूर्खतापूर्ण व्यवहार के आधीन उसे यूँ ही घर में डाल रखा था, इसी मूर्खतापूर्ण प्रथा के तोड़ने पर यह क़ुर्आन की आयत अवतरित हुई थी कि- وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ (सूरः बक़रः 233) जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दे दो और उनकी इददत पूरी हो जाए तो उन्हें रोके न रखो। अतः इस महिला की इददत तो कब की पूरी हो चुकी थी और निकाह करना वैध हो चुका था क्यूँकि उसने तलाक़ देकर केवल अपने घर में रखा हुआ था।

हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद की बनू हनीफ़ा के मुक़ाबले के उद्देश्य से यमामा की ओर जाने के बारे में आता है कि हज़रत अबू बकर रज़ी. ने आप रज़ी. को यह आदेश दे रखा था कि क़बीला असद, गतफ़ान और मालिक बिन नुवैरा इत्यादि के काम को पूरा करके यमामा जाएँ तथा इसके बारे में बड़ा सचेत कर रखा था। शरीक रज़ी. बिन अबदा की रिवायत के हवाले से संक्षिप्त विवरण पेश करने के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने ख़ुत्बः के अन्त में फ़रमाया कि यमामा के युद्ध का विवरण इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131